उद्देश्य अन्तर्निहित होना चाहिए। उसे अभिधात्मक नहीं व्यंजनात्मक होना आवश्यक है।

प्रश्न-26 कहानी और उपन्यास के अन्तर को स्पष्ट रीति से समझाइए।

कहानी को हम उपन्यास की अग्रजा और अनुजा किसी भी नाम से पुकार सकते हैं। यदि कहानी का प्राचीन रूप लें तो उसका जन्म पहले हुआ और उपन्यास का बाद में और यदि आधुनिक रूप से विचार करें तो निस्सन्देह कहानी उपन्यास के पश्चात में नव जीवन की अधिक व्यस्तता में उसे मनोरंजन के दो-चार क्षण प्रदान करने को साहित्य प्रांगण में अवतरित हुई। व्यस्त-जीवन के दो चार क्षणों में ही, उपन्यास, सर्वांग जीवन से ओतप्रोत होने के कारण पाठकों के मन और मस्तिष्क को वह स्फूर्तिमय पेय न पिला सका जो कहानी ने अपने छोटे से चषक में ही उसे पिला दिया। इससे स्पष्ट है कि साहित्य की नवजात आत्मजा, कहानी निश्चय ही अपने साहित्यिक बन्धु उपन्यास से पीछे की सृष्टि है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वृत्त या कथा-साहित्य की वंशजा होने के कारण अनेक बातों में कहानी और उपन्यास में एक साम्य स्थापित हो गया है। किन्तु दोनों ही कृतियाँ अपने-अपने कलात्मक रूप में मानव-जीवन की अभिव्यक्ति करने पर भी अपनी निजी विशेषताओं के कारण एक दूसरे से पृथक हैं। यदि आकार भेद को ही प्रधानता देकर कह दिया जाय कि कहानी छोटा उपन्यास है और उपन्यास बड़ी कहानी है तो दोनों के अस्तित्व के लाले पड़ जायेंगे। कहने का अभिप्राय यह है कि कहानी और उपन्यास में मौलिक-भेद हैं जिनके कारण कहानी, कहानी है और उपन्यास-उपन्यास।

कहानी तथा उपन्यास का दृष्टि-विस्तार- कहानी जीवन की एक झलक पैदा करती है जो इतनी प्रभावपूर्ण होती है कि कुछ ही क्षणों में पाठकों के हृदय को मुग्ध और मस्तिष्क को स्वस्थ कर देती है। कथा-साहित्य की यह सूक्ष्म-कलेवरा-कन्या एक ही घटना पर अपना सारा आलोक इस तरह केन्द्रीभूत कर देती है कि उसके तीव्रतम प्रभाव की मधु-धारा साहित्य संसार को रसाप्लावित किये बिना नहीं रहती। इसीलिए हम कहानीकार को विश्व-विख्यात धनुर्धर अर्जुन जैसा समझते हैं जिसे चिड़िया की लक्ष्य-वेध्य आँख के अतिरिक्त और कुछ दिखाई ही नहीं देता। किन्तु उपन्यासकार की दृष्टि इतनी सीमित नहीं। उसे केवल एक ही चिड़िया पर नहीं वरन् उसके समीप बैठी हुई सभी चिड़ियों का दृश्य सावधानी से अपने उपन्यास में उतारना पड़ता है। दूसरे शब्दों में उपन्यास एक जीवन की तो पूर्ण व्याख्या करता ही है साथ ही उससे सम्बन्धित सभी जीवन उसके कथा-सूत्र में गुम्फित हो सप्राण हो उठते हैं।

कहानी में रहस्योद्घाटन का अभाव- उपन्यास में जहाँ बीच-बीच में अनेक रहस्यों का उद्घाटन होता है वहाँ कहानी एक-दो संकेत चाहे कर दे किन्तु अन्तिम क्षण तक मुख्य बात को पेट में पचाये रहती है। उसके साम्राज्य में तो अन्तिम संवेदना ही सब कुछ है। कहानी के बीच में दिये गये सभी संकेत अन्तिम संवेदना तक पहुंचते ही शत-शत जिह्वाओं को खोल अपना परिचय देने लगते हैं। यही कारण है कि कहानीकार शीघ्रातिशीघ्र अपने पाठकों को इस अन्तिम संवेदना तक ले पहुंचता है। कहानी की यह एकतथ्यता ही उसका जीवन रस है जो उसकी और उपन्यास की मौलिक सत्ता विभाजन करता है।

शैली की दृष्टि से कहानी और उपन्यास- उपन्यास की अपेक्षा अधिक संक्षिप्त होने के कारण कहानी में व्यंजना-प्रधान शैली का आश्रय लिया गया है। यदि कह दें कि कहानी 'गागर में सागर' भरने की कहावत को अपनी व्यंजना शैली के आधार पर ही चरितार्थ

Scanned with CamScanner

... चुकी है तो निश्चय ही हम सत्य के अधिक निकट पहुंच जाएं। अपनी इस व्यंजना-प्रधान शैली के कारण ही कहानी काव्य के समीप जा पहुंची है। दूसरी ओर उपन्यास का काव्यत्व कुछ बिखरा-सा रहता है क्योंकि वह व्याख्या प्रधान है। डॉ० मनोहर गोपाल भार्गव के शब्दों में "उपन्यास को आप नक्षत्र खचित आकाश कहें तो कहानी को सप्तरंगी इन्द्रधनुष मान लें। अकस्मात् रहस्यपूर्ण क्षितिज के एक कोने से रंगों की रागिनी उठती है और देखते-देखते नयनाभिराम होकर अछोर फैल जाती है और फिर देखते-देखते कौन जाने कहाँ विलीन हो जाती है। पर बहुत देर के लिए आंखों में और मन में एक कसक और गूंज छोड़ जाती है।"

उपन्यास में जीवन की व्याख्या अनेक दृष्टिकोणों से की जाती है। उसमें पात्रों का चरित्र-विकास अनेक परिस्थितियों के बीच दिखाया जाना संभव होता है। अतः उपन्यास में कथानक की योजना कुछ विस्तार से की जाती है ताकि पाठक का औत्सुक्य अंत तक बना रहे। बीच-बीच में लेखक अपने मंतव्य को अभिव्यक्त करने का सुयोग भी पाता रहता है। इस प्रकार उपन्यास लेखक के हाथ में जीवन का सर्वांगीण चित्रण करने के लिए काफी बड़ा पटल (Canvass) रहता है। उपन्यासकार की सफलता इसी में है कि अपनी बात कहते हुए और जीवन की व्याख्या करते हुए भी वह कथानक को शिथिल न होने दे और रोचकता का निर्वाह अन्त तक कर सके, कहानी में जीवन के सर्वांगीण चित्रण का अवकाश नहीं रहता वहाँ तो जीवन की अनेक परिस्थितियों में से चुनी हुई ऐसी एक परिस्थिति या भाव का चित्रण रहता है जो अपनी व्यंजना के द्वारा पाठक के अंतस्तल को अपने आवेग से आलोकित कर दे और कहानी में प्रतिफलित जीवन की झाँकी से उसका मन प्रभावाभिभूत हो उठे। इस दृष्टि से कहानी में अधिक सूक्ष्म कलात्मकता अपेक्षित है जब कि उपन्यास में समन्वय और विश्लेषण की आवश्यकता होती है।

कहानी और उपन्यास की जो मूल समानता है वह यह है कि दोनों ही का उद्देश्य मानव-जीवन का चित्रण करना है। किन्तु उपन्यास में मानव-जीवन का विशद और विस्तृत विवेचन होता है जिसमें उसके एक अंगप्रत्यंग की रूपरेखा स्पष्ट हो जाती है जब कि कहानी उसके अंग विशेष को बिजली की भाँति कौंधकर एक क्षण के लिए आलोकित कर देती है। स्वभावतया कहानी लघु आकार की और उपन्यास बड़े आकर का होता है। पर यह आकार-भेद ही कहानी और उपन्यास का वास्तविक अन्तर नहीं है। कहानी को हम लघु उपन्यास अथवा उपन्यास को विस्तृत कहानी की संज्ञा नहीं दे सकते। इसलिये कि दोनों के प्रकार में भी भेद है।

वर्तमान काल में समय का मूल्य बढ़ जाने के कारण कहानी की लोकप्रियता अपेक्षाकृत बढ़ती जा रही है क्योंकि थोड़े समय में कहानी द्वारा पाठक का मनोविनोद हो जाता है।

Scanned with CamScanner